Carpenter's monthly newspaper

कारपेंटर्स न्यूज

www.carpentersnews.com

R.N.I.No.MAHHIN/2005/16460 | Postel Regd. No. MCW/321/2025-27
Posted at Delisle Road, Mumbai-400013. On 20th of Every month | Published on Every 10 th day of the month

मासिक समाचार पत्र

मुंबई | फरवरी 2025 | वर्ष : 20 | अंक : 03 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

ग्रीनप्लाई आयोजित हिंदुस्तान की शान सीजन 3 का नामांकन शुरू .... पेज - 2

PRABAL
Ab Nirmaan Hua Aasaan

Link

डायमंड मार्बल ब्लेड

संपूर्ण शक्ति, बेहतरीन परिणाम
हमारे पावर टूल एक्सेसरीज के साथ

विशेषताएँ

- सूखी और गीली कटिंग
- 65Mn स्टील बॉडी
- तेज और लंबा चले

Product Description	Size	MRP/Unit
Diamond Marble Cutter 110MM	110MM	**143.00**
Diamond Marble Cutter 125MM	125MM	**192.00**

Product Description	Size	MRP/Unit
Diamond Marble Turbo 110MM	110MM	**160.00**

Product Description	Size	MRP/Unit
Diamond Marble Continous Rim 110MM	110MM	**160.00**

आवश्यक सुरक्षा गियर

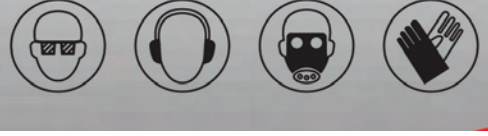

www.link-bharat.com
support@link-bharat.com

LINK HAI NA

TOLL-FREE NUMBER
1800-547-4559

ग्रीनप्लाई आयोजित 'हिंदुस्तान की शान' सीजन 3 का नामांकन शुरू

कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टर को राष्ट्रीय स्तर पर मिलेगी पहचान

मुंबई। वुड पैनल इंडस्ट्री के प्रमुख ब्रांड ग्रीनप्लाई की ओर से कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टर को पूरे देश में पहचान दिलाने का अभियान 'हिंदुस्तान की शान' कार्यक्रम के तीसरे सीजन का नामांकन शुरू हो गया है। काम से कामयाबी स्लोगन के साथ शिल्पकारों को पहचान दिलाने वाले हिंदुस्तान की शान प्रतियोगिता में पूरे भारत के सभी कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टर भाग ले सकते हैं। ग्रीनप्लाई की ओर से आयोजित हिंदुस्तान की शान सीजन 1 और सीजन 2 की ऐतिहासिक सफलता के बाद वुड शिल्पकारों को सीजन 3 का बेसब्री से इंतजार था।

कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टर अपनी कला को सम्मानित, पुरस्कृत करने के लिए अब सीजन 3 में भाग ले सकते हैं। ग्रीनप्लाई के इस खास मुहीम से जुड़ने के लिए क्षेत्रीय प्रतियोगिता में भाग लेना होगा, जिसमें आपके वुड पैनल कौशल और ज्ञान का मूल्याकन/परीक्षण किया जायेगा। इसके बाद अगले राउंड के लिए चुना जायेगा। स्कोर के आधार पर प्रतियोगी को फर्नीचर एंड फिटिंग्स स्किल काउंसिल की ओर से प्रशिक्षण और प्रमाणन भी प्रदान किया जायेगा। सारे प्रतियोगी का अंतिम मूल्यांकन जूरी पैनल के साथ चर्चा के बाद होगा। हिंदुस्तान की शान राष्ट्रीय विजेता को 1,01,000/- रुपये, ट्रॉफी और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया जायेगा। रीजनल विजेता के चार पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण जोन के चार विजेताओं को प्रति 51,000/- ट्रॉफी और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया जायेगा। स्पेशल कैटगरी लकड़ी की नक्काशी के लिए 51,000/- ट्रॉफी और सर्टिफिकेट पुरस्कृत किये जायेंगे।

हिंदुस्तान की शान सीजन 2 में हुआ 5 हजार नामनेशन

ग्रीनप्लाई आयोजित हिंदुस्तान की शान सीजन 2 में देश के कोने कोने से करीब 5 हजार से अधिक कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टरों ने भाग लिया था। लकड़ी के हुनरबाजों को पहचान दिलाने वाले इस कार्यक्रम में करीब 1500 कारपेंटर और कॉन्ट्रेक्टरों ने ऑनलाइन भाग लिया था। हिंदुस्तान की शान सीजन 2 के एंथम को प्रसिद्ध गायक उदित नारायण ने मधुर स्वर दिया था। सीजन 2 के नेशनल विजेता मुंबई के गणपतलाल सुथार रहे जबकि नार्थ जोन से देहरादून के सद्दाम, ईस्ट जोन से कोलकाता के मानव हलधर, साऊथ जोन से बेंगलुरु के नखतराम और वेस्ट जोन से मुंबई के शैलेश डोढिया पुरस्कृत किये गए थे।

भारत दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र बना

मुंबई। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि भारत को जानने की उत्कंठा पुरी दुनिया में बढ़ी है। भारत की धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को देखने और समझने के लिए दुनिया भर के लोग भारत का पर्यटन कर रहे हैं। बांद्रा बीकेसी स्थित जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में पर्यटन आधारित तीन दिवसीय ओटीएम इवेंट के उद्घाटन अवसर पर शेखावत ने कहा कि भारत की सभ्यता विकास, संस्कार, व्यापार वर्षों पुरानी समृद्ध विरासत है।

हजारों साल पूर्व भारत की सभ्यता विकसित थी, जिसे देखने के लिए दुनिया भर से लोग आते थे। कालान्तर में भारत का वैभव देखकर ईष्या होने लगी और हमारे सांस्कृतिक धरोहरों पर हमले हुए लेकिन हजारों साल के बाद भी हमारी संस्कृति सभ्यता बनी रही। उन्होंने कहा कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की सरकार आने के बाद विरासतों का संरक्षण बढ़ा। पर्यटन के लिए सड़कें बनाने के साथ एयरपोर्ट की संख्या बढ़ी साथ की रेलवे को आधुनिक बनाया गया। काशी कॉरिडोर, उज्जैन कॉरिडोर और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के बाद धार्मिक पर्यटन को तेजी से बढ़ावा मिला है। प्रयागराज के महाकुम्भ में 17 दिनों में 27 करोड़ लोग पहुंचे। उन्होंने कहा कि भारत की तस्वीर बदल रही है अब माध्यम वर्ग भी अब देश दुनिया की यात्रा कर रहा है। व्यापार की दृष्टि से देश में धार्मिक, स्वास्थ्य,कृषि आदि के क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं जिसे मिलकर बढ़ावा देने की जरुरत है। इस अवसर पर ओटीएम के आयोजक संजीव अग्रवाल उपस्थित रहे।

कारपेंटर्स न्यूज़

RNI NO. MAHHIN/2005/16460

विज्ञापन व प्रतियों के लिए संपर्क करें : 9320566633
Email: carpentersnews@gmail.com

विश्वकर्मा नमस्तेस्तु,
विश्वात्मा विश्व संभव:
जिनके कारण विश्व में
सब कुछ संभव होता है,
उन विश्वकर्मा को नमस्कार है।
श्री विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर
सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं समेत सभी
शुभचिंतकों को हार्दिक शुभकामनाएं।
– संपादक

मुंबई | फरवरी 2025 | वर्ष : 20 | अंक : 03 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

Greenply

शुरू हो चुका है
हिंदुस्तान की शान अवार्ड्स सीज़न ३ का काफिला

हिंदुस्तान की शान अवार्ड्स ग्रीनप्लाई की पहल है जो वुड पैनल उद्योग के शिल्पकारों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का मौका देगी।

HINDUSTAN KI SHAAN
Presented by Greenply

सीज़न १ विजेता

- राष्ट्रीय विजेता - रमेश सुथार (राजकोट)
- वेस्ट - अरुण विश्वकर्मा (मुंबई)
- ईस्ट - उत्पल सूत्रधार (आसाम)
- नॉर्थ - धर्मेंद्र यादव (पटना)
- साउथ - हरीश जे (बेंगलुरु)

सीज़न २ विजेता

- राष्ट्रीय विजेता- गणपतलाल सुथार (मुंबई)
- वेस्ट - शैलेश डोडिया (मुंबई)
- ईस्ट - मानब हल्दार (कोलकाता)
- नॉर्थ - सद्दाम (देहरादून)
- साउथ - नखतराम (बेंगलुरु)

हिंदुस्तान की शान अवॉर्ड्स, ग्रीनप्लाई की एक पहल है जो वुड पॅनल इंडस्ट्री के कार्पेंटर और कांट्रेक्टर को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का मंच है। सीज़न १ और सीज़न २ के अपार सफलता के बाद सीज़न ३ के नॉमिनेशन शुरू हो चुके है। अगर आप भी कांट्रेक्टर या कारपेंटर है और बेहतरीन काम करते हैं, तो आपके पास है मौक़ा अपना काम पुरे देश को दिखाने का।

ग्रीनप्लाई और कारपेंटर्स न्यूज़ आप सभी भाइयों से यही निवेदन करता है की इस प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर हिसा ले। नीचे दिया गया QR स्कैन करें और अपना नामांकन भरें ।

मेहनत जहाँ झलकेगी, कामयाबी वहीं मिलेगी

नामांकन फॉर्म भरने के लिए
QR स्कैन करे

ताला व हार्डवेयर कारोबार से एक लाख से ज्यादा लोगों को मिलता है रोजगार

3000 कारखानों में होता है तालों का निर्माण

अलीगढ़। करीब दो सौ वर्ष पूर्व शुरू हुए अलीगढ़ के ताला उद्योग ने समय के साथ खुद में बदलाव किया है। अलीगढ़ के ताला उद्यमियों ने इलेक्ट्रॉनिक व लेजर मशीनों के जरिए खासियत बढ़ाकर निर्यात की बदौलत विदेश तक पहचान बनाई है। अब इस ताले को सरकारी मदद की चाबी की जरूरत है। करीब 112 साल में मजबूत पहचान बनाने वाला हार्डवेयर उद्योग भी अव्यवस्थाओं के जंजाल में उलझकर मजबूती खो रहा है। लागत के साथ-साथ श्रमिकों की कमी परेशानी खड़ी कर रही है। यहां के उद्यमी अब दोनों उद्योगों के लिए केंद्र की उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना में शामिल होने की उम्मीद संजोए बैठे हैं। अति सूक्ष्म और कुटीर उद्योग की श्रेणी में आने वाले ताला उद्योग की जिले में करीब 5500 इकाइयां हैं।

पीतल, स्टील और लोहे के तालों के कारखानों में समय के साथ अत्याधुनिक मशीनें लग गई हैं। ताला कारोबार 'एक जिला, एक उत्पाद' (ओडीओपी) योजना में शामिल होकर यूरोपीय व खाड़ी देशों, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, रूस आदि देशों तक अपनी धाक जमाए है।

पिछले वर्ष ताला कारोबार में लगभग 550 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ। पैड लाक, तिजोरी लाक व शटर लाक निर्माण के क्षेत्र में करीब 1100 करोड़ रुपये का टर्नओवर रहा। एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार देने वाले ताला उद्योग की नामचीन कंपनियों को विदेशी तालों से मुकाबले में कीमत से जूझने पड़ रही है। इसी तरह डोर फिटिंग में देश दुनिया में पहचान बनाने वाले जिले के हार्डवेयर उद्योग में चार धातुओं पीतल, आयरन, सिल्वर, जस्ता से 500 से 600 तरह के उत्पाद उत्पाद तैयार होते हैं। इस उद्योग के सामने स्थानीय समस्याओं में सबसे बड़ी श्रमिकों का संकट है तो 18 प्रतिशत जीएसटी भी समस्या है। हार्डवेयर उद्यमी मनीष बंसल कहते हैं कि उद्योग को 25 हजार से अधिक श्रमिकों की जरूरत है। मुफ्त राशन स्कीम से मजदूर अब काम नहीं करना चाहते। इस योजना को बंद किया जाना चाहिए।

ताला कारोबारी मुनेश अग्रवाल का कहना है कि कारीगरों के लिए कौशल विकास की व्यवस्था होनी चाहिए। यह उद्योग कुशल कारीगरों की कमी से जूझ रहा है। हार्डवेयर निर्माण एसोसिएशन के सचिव विक्रांत गर्ग का मानना है कि ताला और हार्डवेयर दोनों ही उद्यमी को पीएलआइ योजना में शामिल करना चाहिए। कंटेनर डिपो की मांग पहले से भी केंद्र सरकार से है।

फर्नीचर कारीगरों को सरकारी मदद का इंतजार

मुजफ्फरपुर। मुजफ्फरपुर में लकड़ी और फर्नीचर का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जहां रोजाना एक करोड़ रुपये का व्यापार होता है। शहर में 40 आरा मशीनों और 170 से अधिक फर्नीचर दुकानों के जरिए खिड़की दरवाजे से लेकर बेड दिवान तक की डिमांड पूरी की जाती है। शिक्षण संस्थानों, घरों की सजावट और खिड़की दरवाजों के लिए भी लकड़ी की मांग लगातार बढ़ रही है। इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों के 3,000 से अधिक कारीगरों की स्थिति चिंताजनक है, जिन्हें काम के लिए शहर का रुख करना पड़ता है।

मुजफ्फरपुर में बड़ी संख्या में कारीगर फर्नीचर निर्माण से जुड़े हैं। इनमें कुछ कारीगर दुकानों में काम करते हैं, जबकि और साइट पर फर्नीचर तैयार करते हैं। रेडीमेड फर्नीचर और स्टील दरवाजों की बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद लकड़ी का व्यवसाय प्रभावित नहीं हुआ है। बढ़ई समाज से जुड़े प्रतिनिधियों ने सरकार से मदद की अपील की है। उनका कहना है कि विश्वकर्मा योजना के तहत उचित वित्तीय सहायता नहीं मिल पा रही है, जिससे कारीगरों को अपने व्यवसाय को बढ़ाने में दिक्कतें हो रही है। बढ़ई विश्वकर्मा संघ के ट्रस्टी प्रभाकर शर्मा ने बताया कि सरकार को कारीगरों की कला को पहचानते हुए योजनाएं शुरू करनी चाहिए। इससे न केवल कारीगरों की स्थिति सुधरेगी, बल्कि यह परंपरागत कला भी जीवित रहेगी। लकड़ी के इस बढ़ते कारोबार से मुजफ्फरपुर शहर की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। ग्रामीण कारीगरों की समस्याओं का समाधान कर सरकार इस क्षेत्र को और ऊंचाई पर ले जा सकती है।

चिनार के पेड़ों को बचाने के लिए हो रही है जियो टैगिंग

जम्मू। चिनार के पेड़ कश्मीर की संस्कृति और पर्यावरण का महत्वपूर्ण प्रतीक माने जाते हैं। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में सैकड़ों चिनार पेड़ खत्म हो गए हैं। कश्मीर के इतिहास और संस्कृति के प्रतीक चिनार को बचाने के लिए अब जियो टैगिंग तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। कश्मीर में चिनार के पेड़ों को संरक्षित करने और उनकी बेहतर देखरेख के लिए एक बड़ी पहल शुरू की गई है। हजारों चिनार पेड़ों की जियो टैगिंग की जा रही है ताकि इनके बारे में एक विस्तृत डेटाबेस तैयार किया जा सके। यह कदम शहरीकरण, सड़कों के चौड़ीकरण और बीमारियों से हो रहे नुकसान को रोकने के लिए उठाया गया है। जियो टैगिंग के तहत प्रत्येक चिनार पेड़ पर एक क्यूआर कोड लगाया जा रहा है। इस कोड में पेड़ के स्थान, आयु, स्वास्थ्य और बढ़ने के पैटर्न सहित 25 प्रकार की जानकारियां दर्ज की गई हैं। इससे पर्यावरणविद् इन पेड़ों के बदलावों पर नजर रख सकेंगे और खतरे के कारकों को दूर कर सकेंगे। परियोजना के प्रमुख सैयद तारिक के मुताबिक अब तक हमने लगभग 29,000 चिनार पेड़ों की जियो-टैगिंग की है। छोटे आकार के कुछ पेड़ अभी टैग नहीं किए गए हैं। इन्हें जल्द ही टैग किया जाएगा। उन्होंने बताया कि हमने एक अल्ट्रासोनोग्राफी आधारित उपकरण (यूएसजी) का उपयोग शुरू किया है, जो बिना मानवीय हस्तक्षेप के खतरे के स्तर को माप सकता है। यह उपकरण मानवीय जांच की आवश्यकता को खत्म करेगा और पेड़ों के जोखिम कारकों का मूल्यांकन करेगा।

चिनार के पेड़ पूरी तरह विकसित होने में लगभग 150 सालों का समय लेते हैं। यह पेड़ 30 मीटर (100 फीट) की ऊंचाई तक और 10 से 15 मीटर (30 से 50 फुट) तक के घेराव तक बढ़ सकते हैं। चिनार की पत्तियों और छाल का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है, इसकी लकड़ी जिसे लेसवुड के रूप में जाना जाता है का उपयोग आंतरिक फर्नीचर के लिए किया जाता है। इसकी टहनियां और जड़ों का उपयोग रंग बनाने के लिए किया जाता है। क्षेत्र का सबसे पुराना चिनार श्रीनगर के बाहरी इलाके में स्थित है और यह लगभग 650 साल पुराना है। इसे दुनिया का सबसे पुराना चिनार माना जाता है। चिनार के पेड़ कश्मीर के इतिहास और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। कुछ पेड़ों की उम्र 300 से 700 साल के बीच है। हालांकि पिछले कुछ दशक इन पेड़ों के लिए दर्दनाक रहे हैं। अनदेखी से गुजर रहे इन पेड़ों को कटाई का संकट भी झेलना पड़ा है। श्रीनगर में ही पिछले कुछ सालों में 50 से ज्यादा चिनार काट दिए गए। पुराने दस्तावेजों के मुताबिक 1947 से पहले राज्य में चिनारों की संख्या 45 हजार से ज्यादा थी। लेकिन 1980 के बाद इनकी संख्या काफी कम हुई है। 2017 में हुई गिनती के मुताबिक राज्य में 35 हजार से ज्यादा चिनार हैं। इनमें वे भी हैं, जिन्हें हाल ही में रोपा गया। हाल के दिनों में पेड़ों की देखभाल पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। 2020 में स्थानीय प्रशासन ने चिनार दिवस भी मनाना शुरू किया था।

पेड़ों के संरक्षण के लिए उठाया कदम

दुनिया के कई देशों में होता है जियो टैगिंग का इस्तेमाल

जियो टैगिंग का इस्तेमाल दुनियाभर में पेड़ों, जंगलों और जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन के लिए किया जा रहा है। केन्या के नैरोबी में शहरी पेड़ों के बेहतर प्रबंधन और संरक्षण के लिए जियो टैगिंग का उपयोग किया गया। ग्रीन बेल्ट मूवमेंट, नोबेल पुरस्कार विजेता वांगारी मथाई ने शुरू किया था। जीपीएस तकनीक का उपयोग करके शहरी और ग्रामीण पेड़ों की जानकारी दर्ज की। इस डेटा ने शहर को विकास परियोजनाएं पेड़ों को नुकसान पहुंचाए बिना योजना बनाने में मदद की। अमेजन के वर्षा वनों में कटाई पर नजर रखने में जियो टैगिंग और सैटेलाइट मॉनिटरिंग सिस्टम का खूब उपयोग किया गया। ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच जैसे संगठन और स्थानीय समुदाय अवैध कटाई की पहचान करने, वनों की कटाई पर नजर रखने और संरक्षित क्षेत्रों की निगरानी के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। यह डेटा अधिकारियों को तुरंत हस्तक्षेप करने और महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने में मदद करता है। बेंगलुरू और हिमाचल में जियो टैगिंग बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हुई है। हिमाचल प्रदेश में जियो टैगिंग का उपयोग सेब के पेड़ों को मैप करने और उनकी उत्पादकता का पता लगाने के लिए किया गया।

भक्ति हीन मनुष्य है बिन जल के बादल के समान : हरि चैतन्य पुरी

रूद्रपुर। श्री हरि कृपा पीठाधीश्वर स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने स्वागत एनक्लेव में उपस्थित भक्त समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि आपकी कोई भी क्रिया, चेष्टा, व्यवहार या कर्म ऐसा न हो जाए जिसे देखकर कोई उंगली उठाये। आपके जीवन में वांछित परिवर्तन भी आना चाहिए। अपनी गलतियों और बुराइयों को समझे व दूर करें। दूसरों पर मिथ्या दोषारोपण से कहीं बेहतर है कि स्वयं आत्म अन्वेषण करें। कई बार हम स्वयं गलतियां करते हैं, स्वयं अपने हाथों अपने लिए पतन का गड्ढा खोदते हैं व दोष दूसरों को देते हैं। दूसरों में दोष ढूंढने के कारण हमें अपने अंदर दोष होते हुए भी दिखाई नहीं देते। आंखें सबको देखती है पर अपने को नहीं देख पाती। निष्पक्ष शांत, एकाग्रचित्त होकर अपनी आत्मा की आवाज़ सुनें, तो पता चल जाएगा कि लोग हमें क्या समझते हैं, हमारा मन क्या समझता है, परन्तु वास्तव में हम है क्या। किसी को दोष क्यों देते हो, अपनी अनेक आंतरिक दुर्बलता ही विनाश का कारण बनती है।

महाराज ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन को श्रेष्ठ व मर्यादित बनाने के लिए जहां से अच्छाई मिले वहां से ग्रहण करके अपने जीवन को समाज को लिए कल्याणकारी श्रेष्ठ व मर्यादित बनाए। संसार में किसी को भी, कभी भी, किसी प्रकार से भी दुख, भय या कलेश नहीं पहुंचाना चाहिए तथा नहीं पहुंचाने की प्रेरणा या इच्छा करनी चाहिए। सदैव सत्य स्वरूप परमात्मा की ही शरण लेनी चाहिए। हमें प्रभु का कृपा पात्र बनने की कोशिश करनी चाहिए दया पात्र नहीं। प्रेम पूर्वक की गई भक्ति से परमात्मा प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों पर कृपा करते हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा व परमात्मा एक ही है लेकिन फिर भी अलग हैं। परमात्मा सृष्टि के कण कण में विद्यमान हैं और आत्मा उसके एक अंश में, परमात्मा का आत्मा के बिना अस्तित्व है मगर आत्मा का परमात्मा के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। परमात्मा का इस सृष्टि में सबसे एक ही नाता है भक्ति का। उसके यहां ऊंच नीच, जाति-पाति आदि का कोई भेद नहीं है। परमात्मा के लिए तो एक मात्र प्रेमपूर्ण भक्ति ही सर्वस्व है। भक्तिहीन मनुष्य ठीक उसी प्रकार है जैसे बिना जल के बादल, चाहे वह कितने ही उज्जवल क्यों न हो, मगर किसी के काम के नहीं होते। भक्तिहीन जीवन कितनी ही विशेषताओं से पूर्ण होने पर भी बेकार है। भक्तिमय मनुष्य परमात्मा को अत्यंत प्रिय होते हैं और वही विशेष कृपा के अधिकारी होते हैं। उन्होंने कहा कि अपने विवेक को सदैव जागृत रखें। माता-पिता, गुरुजनों, शास्त्र, संस्कृति के प्रति श्रद्धा आदर का भाव रखें। संसार की हर वस्तु, पदार्थ, प्राणी नाशवान है, इनका सदैव साथ नहीं रहता तथा परमात्मा का साथ कभी नहीं छूटता है। इसलिए हमें जगत की यथासंभव सेवा करनी चाहिए। सेवा का अवसर मिलने पर स्वयं को सौभाग्यशाली समझना चाहिए व सेवा के आये इस अवसर को हाथ से न जाने देने पर स्वयं को परम सौभाग्यशाली समझना चाहिए। हमें जगत में जब भी संत, गुरु, परमात्मा, बुजुर्ग, माता-पिता व धर्म एवं संस्कृति की सेवा का अवसर मिले तो सेवा

अवश्य करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सेवा धर्म इतना सरल नहीं है जितना हमने इसे समझा है यह सबसे कठिन है। परंतु असंभव नहीं है। यदि हम प्रभु स्मरण करते हुए प्रयास करें तो इस असंभव को भी संभव किया जा सकता है। मनुष्य महान है शक्ति का पुंज है सब कुछ कर सकता है।

जायका इंडिया का

सेव टमाटर की सब्जी

सेव टमाटर की सब्जी एक स्वादिष्ट भारतीय व्यंजन है जिसे बनाना काफी आसान है। सेव की सब्जी भारतीयों का एक पारंपरिक व्यंजन है, जो अपने स्वाद और पोषण के कारण ज्यादातर जगहों पर प्रसिद्ध है। इसमें मुख्य रूप से सेव और टमाटर को मसालों के साथ भूनकर बनाया जाता है। सेव की सब्जी देश के कई प्रांतों में बनाई जाती है। सेव टमाटर की सब्जी का स्वाद बढ़ाने के लिए इसको घी में तड़का लगाकर बनाया जाता है और इसे बारीक कटी हरी धनिया से सजाकर परोसा जाता है।

सामग्री : 1/2 कप बेसन सेव, 2 बड़े चम्मच घी या तेल,1/2 चम्मच राई,1 चम्मच जीरा,1/4 चम्मच हींग, 2 मध्यम आकार के बारीक कटे प्याज, 2-3 हरी मिर्च बारीक कटी हुई, 1 बड़ा चम्मच अदरक-लहसुन का पेस्ट,1/2 चम्मच हल्दी पाउडर,1 चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर,1 चम्मच धनिया पाउडर,1/2 चम्मच गरम मसाला,1/4 कप हरा धनिया बारीक कटा हुआ, नमक स्वादानुसार, 4-5 टमाटर बारीक कटे हुए या 1 कप टमाटर प्युरी

विधि : एक कढ़ाई में घी गरम करें, राई, जीरा और हींग डालें। जब जीरा चटकने लगे, प्याज और हरी मिर्च डालें। प्याज के सुनहरा होने तक भूनें, अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और 1 मिनट तक भूनें। हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और गरम मसाला डालें। 1 मिनट तक भूनें अब टमाटर और नमक डालें, टमाटर के नरम होने तक भूनें। पानी में हल्का भिगोकर और निचोड़कर सेव को डालें। सब्जी को पकाएं- 5-10 मिनट तक धीमी आंच पर सब्जी को पकाएं। हरा धनिया डालकर अच्छी तरह मिलाएं। गरमागरम रोटी, चावल या पराठे के साथ परोसें।

सेहत

पालक और पनीर का कॉम्बिनेशन गलत

पालक पनीर हमारे देश में बेहद लोकप्रिय सब्जी है। लोग इसे इसलिए सबसे ज्यादा पसंद करते हैं, क्योंकि इसमें भरपूर पोषण होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कुछ न्यूट्रिशनिस्ट इस कॉम्बिनेशन को गलत बताते हैं। आयुर्वेद के हिसाब से भी पालक और पनीर साथ नहीं खाना चाहिए। पनीर प्रोटीन और कैल्शियम से भरपूर होता है। इसमें मैग्नीशियम, पोटेशियम, फास्फोरस और जिंक सहित शरीर को लाभ पहुंचाने वाले कई तत्व होते हैं। पनीर शाकाहारी खाना पसंद करने वालों के लिए बेहद शानदार सोर्स है।

पालक में आयरन, पोटेशियम, प्रोटीन, फाइबर और कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसे खाने से इम्यूनिटी मजबूत होती है। यह एक ऐसी सब्जी है जिसमें लगभग सारा पानी होता है। अतिरिक्त H2O के लिए इसे पूरे दिन अपने भोजन और नाश्ते में शामिल कर सकते हैं। डायबिटीज और दिल की सेहत के लिए भी विशेषज्ञ इसे नियमित रूप से खाने के लिए कहते हैं। पालक और पनीर दोनों को साथ मिलाने से यह एक दूसरे के अच्छे पोषक तत्व को समाप्त कर देते हैं। इससे दोनों की न्यूट्रिशन वैल्यू कम हो जाती है। पनीर में कैल्शियम होता है वहीं पालक आयरन से भरपूर होती है। जब इन्हें साथ खाया जाता है तो पनीर में मौजूद कैल्शियम पालक में मौजूद आयरन के गुण को समाप्त कर देता है। पालक को आलू या फिर कॉर्न के साथ ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। जितना महत्वपूर्ण अच्छा फूड खाना है। उतना ही महत्वपूर्ण उसका कॉम्बिनेशन भी है। कुछ फूड कॉम्बिनेशन ऐसे हैं जो कि एक दूसरे के पोषक तत्वों के अब्सॉर्प्शन को रोकते हैं, आयुर्वेद में इसके बारे में बहुत कुछ दिया हुआ है। ऐसे में कॉम्बिनेशन को ध्यान में रखते हुए कुकिंग करनी चाहिए।

दारुक वन में होती है देवदार के पेड़ों की पूजा

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध जागेश्वर धाम पर प्रति वर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यह धाम देवदार के पेड़ों से घिरा हुआ है। इस जगह को दारुक वन के नाम से भी जाना जाता है। मान्यताओं के अनुसार इस वन में भोलेनाथ का वास होता है। स्थानीय लोगों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु भी इन पेड़ों की पूजा करते हैं। यहां के लोग देवदार को भगवान शिव, माता पार्वती, गणेश भगवान और पांडव वृक्ष के रूप में पूजते हैं। देवदार को द वुड ऑफ गॉड और भगवान शिव की जटा के नाम से भी जाना जाता है। पुजारी ताराचंद्र भट्ट बताते हैं कि 8वें ज्योतिर्लिंग के रूप में भगवान शंकर को जागेश्वर धाम में पूजा जाता है। जागेश्वर धाम को नागेश्वर दारुक वन की वजह से भी जाना जाता है। नागेश यानी भगवान भोलेनाथ और देवदार के पेड़ों को दारुक वन कहा जाता है। देवदार के

पेड़ों से ही भगवान शंकर की पूजा होती है। इन पेड़ों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भोलेनाथ यहां अर्धनारीश्वर स्वरूप में वृक्ष के एक भाग में मौजूद हैं। इसमें एक भाग माता पार्वती का है। इसके अलावा एक पेड़ में भगवान गणेश के साथ माता पार्वती और महादेव विराजमान हैं। साथ ही यहां पर पांडव रूपी वृक्ष को भी पूजा जाता है। मंदिर के एक अन्य पुजारी कौस्तुभा नंद भट्ट बताते हैं कि यह बात सत्य है कि देवदार के पेड़ों में भगवान शंकर का वास होता है। यहां के लोग इन पेड़ों की भगवान शंकर के रूप में पूजा अर्चना करते हैं। उनका मानना है कि देवदार की एक टहनी भी टूटनी या फिर काटनी नहीं चाहिए। जागेश्वर धाम में करीब 3 किलोमीटर के दायरे में केवल देवदार के पेड़ मिलते हैं। इस तीन किलोमीटर के दायरे के अलावा किसी भी दिशा में एक भी देवदार का पेड़ देखने को नहीं मिलता है। यहां पर दर्शन करने के लिए आए श्रद्धालु बताते हैं कि दारुक वन में ध्यान करने पर उन्हें पॉजिटिव एनर्जी महसूस होती है।

NIKHIL
ADHESIVES LTD.

श्री विश्वकर्मा जयंती

श्री विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर
निर्माण एवं सृजन के प्रतीक,
शिल्पकार में सर्वोच्च,
देव शिल्पी आराध्य देव
विश्वकर्माजी को कोटि-कोटि
नमन एवं
अपने परिश्रम, रचनात्मक और
सृजनशीलता से
राष्ट्रनिर्माण में जुटे नये भारत के
सभी शिल्पियों को
महाकोल परिवार की ओर से
विश्वकर्मा जयंती की
हार्दिक शुभकामना

Mahacol®

GERMAN TECHNOLOGY

हरीसन ने डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और डिजी सेफ सीरीज की शुरुआत

हरीसन 'विस्तार' कार्यक्रम का आयोजन

नई दिल्ली। हरीसन ने 'विस्तार' कार्यक्रम के तहत अपनी नई डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ को लॉन्च किया है, जो आधुनिक सुरक्षा तकनीक और उपभोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। 'विस्तार' केवल एक उत्पाद लॉन्च नहीं, बल्कि हरीसन का एक व्यापक बिजनेस एक्सपैंशन प्रोग्राम है, जिसका उद्देश्य सुरक्षा समाधान के साथ-साथ डीलर नेटवर्क और ब्रांड की पहुंच को भी पूरे देश में मजबूत और विस्तृत करना है।

डिजिटल युग में, जहां सुरक्षा का महत्व तेजी से बढ़ रहा है, हरीसन ने अपने डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ को उन्नत तकनीक, स्मार्ट फीचर्स और उच्च विश्वसनीयता के साथ लॉन्च किया है। इस सीरीज के तहत उपभोक्ताओं को अधिक सुविधा, सशक्तिकरण और सुरक्षा प्रदान की जाती है।

'विस्तार' कार्यक्रम का फोकस न केवल उत्पादों की नई रेंज पेश करना है, बल्कि बिजनेस एक्सपैंशन प्रोग्राम के जरिए डीलरों, आर्किटेक्ट्स और डिजाइनर्स के साथ एक मजबूत साझेदारी बनाना है। इसके अंतर्गत एक्सक्लूसिव ब्रांड आउटलेट्स (EBOs) खोलने और स्थानीय बाजारों में हरीसन की उपस्थिति को बढ़ाने की योजना शामिल है। यह कार्यक्रम हरीसन की प्रगतिशील सोच, नवाचार और सुरक्षा समाधान में उत्कृष्टता प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और डिजी सेफ सीरीज

डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ हरीसन की अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीक का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस सीरीज में फिंगरप्रिंट रिकग्निशन, पिन कोड एंट्री और स्मार्ट ऐप कंट्रोल जैसी उन्नत सुविधाएं शामिल हैं, जो सुरक्षा को नए स्तर पर ले जाती हैं। ये उत्पाद न केवल घर और कार्यालयों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि उपयोगकर्ताओं को सहज और तेज़ एक्सेस का अनुभव भी प्रदान करते हैं। इसके आधुनिक डिज़ाइन, टिकाऊपन और तकनीकी प्रगति ने इसे ग्राहकों के लिए एक अनिवार्य सुरक्षा समाधान बना दिया है। यह सीरीज़ डिजिटल युग की सुरक्षा जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

ठाणे में खुली यूरो डेकोर की एक्सक्लूसिव गैलरी

यूरो डेकोर प्रा. लिमिटेड (EURO Decor Pvt. Ltd.) कंपनी की एक्सक्लूसिव गैलरी ठाणे शहर के खोपट इलाके में खुल गई है। 17 जनवरी 2025 को खुले यूरो डेकोर के इस गैलरी में लैमिनेट, वीनियर और मार्केट्री की विशाल, आकर्षक, अनोखी, सुंदर और विविध डिज़ाइन्स श्रृंखला को प्रदर्शित किया गया है। इस गैलरी में आर्किटेक्ट, इंटीरियर डिज़ाइनर, ठेकेदार, कारपेंटर, रिटेलर और उपयोगकर्ता घरों, ऑफिस, होटलों, रेस्टोरेंटों, शॉपिंग मॉल आदि जैसे विभिन्न प्रकार के इंटीरियर्स के लिए उत्कृष्ट, मेस्मराइज़िंग, कॉन्टेम्पररी डिजाइन वाले लैमिनेट और वीनियर का चयन कर सकते हैं।

E3 ग्रुप : मटेशिया बेंगलुरु में अपनी पहचान बनाने को तैयार

नई दिल्ली। इस बार मटेशिया बिल्डिंग मैटेरियल एग्जीबिशन का आयोजन पहली बार बेंगलुरु में 21, 22 और 23 फरवरी को हो रहा है और E3 ग्रुप इसमें पूरे जोश के साथ भाग ले रहा है। E3 ग्रुप अपने बेहतरीन प्रोडक्ट्स की शानदार रेंज पेश करने के लिए तैयार है।

E3 ग्रुप Edge Band, HDMR, Boil Guard, MDF Interior Grade, MDF Exterior Grade, Pre-Laminated Boards, HD Acrylic Panels, Anti-Scratch Acrylic Panels 3 UV High-Gloss Panels आदि का उत्पादन कर रही है।

दक्षिण भारत के लिए एक नई शुरुआत, हिंदूपुर में नया प्लांट

E3 Group ने हिंदूपुर, आंध्र प्रदेश में अपने नए Edgeband प्लांट की शुरुआत कर दी है। खासतौर पर दक्षिण भारत के ग्राहकों को बेहतरीन सेवा देने के लिए यह प्लांट तैयार किया गया है। इसका सफल ट्रायल रन पूरा कर लिया गया है और E3 अपने ग्राहकों को और भी बेहतर गुणवत्ता और सेवा देने के लिए तैयार है।

भारत में पहली बार – 100% मैचिंग Edge Band और Laminates

E3 लेकर आ रहा है Pre- Laminated HDMR और MDF Boards, जो 100% मैचिंग Edge Bands और Laminates के साथ मिलकर एकदम परफेक्ट लुक देंगे। यह पहली बार भारत में हो रहा है, जहां स्टाइल और परफेक्शन का ऐसा संगम देखने को मिलेगा।

भारत में बना, भारत के लिए

E3 Group हमेशा से ऐसी इनोवेटिव और टिकाऊ सतह समाधान (Surface Solutions) लाने में अग्रणी रहा है जो इंटीरियर और एक्सटीरियर दोनों के लिए परफेक्ट हैं। हमारे प्रोडक्ट्स मजबूत, इको-फ्रेंडली, किफायती और इंस्टॉल करने में आसान हैं। तीन दशक से ज्यादा के अनुभव के साथ E3 ग्रुप 'Made in India' पहल का गर्व समर्थन करता है। E3 ग्रुप के उत्पादों को MATECIA 2025 में अवलोकन किया जा सकता है।

तापड़िया टूल्स : हर ग्राहक के लिए बेहतर अनुभव

मुंबई। भारत विनिर्माण क्षेत्र में निवेश के लिए सबसे आकर्षक विकल्पों में से एक बन गया है। भारत सरकार ने राष्ट्र में विनिर्माण क्षेत्र के विकास के लिए अनुकूल वातावरण स्थापित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। इस अवसर के मद्देनजर, तापड़िया बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए नियमित रूप से नए उत्पाद पेश कर रहा है। वर्तमान में मेसर्स ओरिएंट एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड भारत के विशाल राष्ट्र में तापड़िया टूल्स के हाथ के औजारों के असाधारण चयन के वितरण और विपणन में एक आदर्श बदलाव लाने के लिए तैयार है। हथौड़े और छेनी जैसे उपकरण लंबे समय से मौजूद हैं और अच्छे कारण से वे बहुत बढ़िया काम करते हैं। हथौड़े कई पीढ़ियों से अनगिनत व्यापारों और घरेलू कामों के लिए अपरिहार्य उपकरण रहे हैं। कील ठोकना, फर्नीचर असेंबली और अन्य लकड़ी के कामों में तापड़िया हथौड़ों के उपयोग से बहुत लाभ होता है। कील ठोकना, इमारतों को गिराना, धातु और कंक्रीट को ढालना और यहां तक की आपूर्ति को व्यवस्थित करना निर्माण उद्योग में हथौड़ों के कई उपयोगों में से कुछ हैं। हथौड़े के सिर का एक हिस्सा प्रहार करने के लिए और दूसरा हिस्सा रिवेटिंग के लिए होता है। हथौड़ा आकार देने, फोर्जिंग, रिवेटिंग और छेनी से वार करने के लिए बहुत बढ़िया है। हथौड़े का सिर इतना महत्वपूर्ण होता है की तापड़िया हथौड़ों को प्रीमियम कार्बन स्टील से फोर्ज किया जाता है और इसमें कई अन्य उल्लेखनीय विशेषताएं शामिल होती हैं। जंग को रोकने के लिए उसे पेंट और फॉस्फेट लेपित किया जाता है और उपयोगकर्ता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अलग-अलग माध्यम से गुजरना पड़ता है। तापड़िया हथौड़े विभिन्न आकारों, वजन और हैंडल की लंबाई में उपलब्ध हैं। तापड़िया हथौड़ा चुनते समय, उन विशिष्ट कार्यों पर विचार करें जिनके लिए आपको इसकी आवश्यकता है। वजन और हैंडल की लंबाई जो आपके लिए आरामदायक हो। इसमें हिकॉरी की लकड़ी का उपयोग किया जाता है क्योंकि यह मारते समय एक आरामदायक पकड़ प्रदान करती है, जो किसी भी हथौड़े के हैंडल की एक आवश्यक विशेषता है। हथौड़ों के सामान्य प्रकारों में बॉल-पेन हथौड़े शामिल हैं जिनका उपयोग आमतौर पर धातु को आकार देने और फोर्ज करने, रिवेटिंग और छेनी से वार करने के लिए किया जाता है। क्रॉस-पेन हथौड़ों का उपयोग आमतौर पर धातु के काम में धातु को आकार देने और मोड़ने और पंच और छेनी से वार करने जैसे कार्यों के लिए किया जाता है। क्लब हथौड़ों का उपयोग छेनी और पंच चलाने के लिए किया जाता है। पंजे वाले हथौड़ों का उपयोग मुख्य रूप से विभिन्न सामग्रियों में कील ठोकने या उन्हें हटाने के लिए किया जाता है, मशीनिस्ट हथौड़ों का उपयोग आमतौर पर धातु के काम और मशीनरी असेंबली में किया जाता है। इलेक्ट्रीशियन हथौड़े, फाइबर ग्लास से बने होते हैं अगर इलेक्ट्रीशियन गलती से किसी चालू सर्किट को छू लेते हैं, तो उन्हें कोई खतरनाक झटका नहीं लगेगा। स्लेज हथौड़ों का उपयोग विध्वंस परियोजना से निपटने, कंक्रीट को तोड़ने या जमीन में खूंटे गाड़ने के लिए किया जाता है और सॉफ्ट फेस वाले हथौड़ों का उपयोग तारों या नाजुक धातुओं पर काम करने के लिए किया जाता है। बेवेल्ड एज छेनी विभिन्न आकृतियों, आकारों और कार्यों में आती हैं। तापड़िया की छेनी की रेंज छोटे विवरणों के लिए छोटे हाथ के औजारों से लेकर लकड़ी के बड़े हिस्सों को हटाने, पैटर्न या डिज़ाइन के आकार को खुरदरा करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली छेनी होती है। वे अच्छी तरह से संतुलित हैं, एक हल्के, एर्गोनोमिक हैंडल के साथ जो उन्हें काटने के दौरान किनारे से पकड़ना बनाता है जिससे उपयोगकर्ताओं की समग्र कार्य कुशलता में सुधार होता है। हथौड़े के वार के दौरान हैंडल को नुकसान से बचाने के लिए छेनी के हैंडल पर विशेष स्टील कैप लगे होते हैं। छेनी के ब्लेड उच्च श्रेणी के मिश्र धातु स्टील से निर्मित होते हैं ताकि बेहतरीन कटिंग परिणाम के लिए तेज और लंबी कटिंग क्षमता, तुरंत उपयोग के लिए पहले से धारदार कटिंग एज और उचित ब्लेड कटिंग एंगल प्राप्त हो। जंग से बचने के लिए इन छेनी को स्टील ब्लेड की तरफ जंग रोधी कोटिंग की गई है।

तापड़िया टूल्स लगातार बाजार की मांग को पूरा करने के लिए नए उत्पाद लॉन्च कर रहा है। तापड़िया टूल्स उत्पादों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.tapariatools.com पर जाएं या अपने प्रश्न sales@tapariatools.com पर ईमेल करें।

HARRISON®
Glorious 75+ Years

वसंत पंचमी
की हार्दिक शुभकामनाएं

आज ही रजिस्टर करें और पाएं
अनेको उपहार

कारपेंटर भाईयों के लिए आकर्षक उपहार

नॉट:- ऊपर दर्शायी गई फोटो सिर्फ उपहार को दर्शाने हेतु है मिलने वाला उपहार इनमे से भिन्न हो सकता है : रंग मॉडल इत्यादि। टोल फ्री नम्बर : 1-800-572-5795

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
www.harrisonlocks.com | email : Info@harrisonlocks.com

9599281937

हरीसन प्रोडक्ट पॉइंट अर्जित करने का तरीका किया और भी आसान

मात्र क्यू आर कॉड को स्कैन करने पर पाए उपहार

देश का भरोसेमंद ब्रांड हरीसन ने हाल ही मे शुरू कर दिया है, कारपेंटर्स के लिए क्यू आर स्कैनिंग फीचर जिसके तहत अब कारपेंटर्स आसानी से जीत सकते है उपहार मात्र क्यू आर स्कैन करके | कारपेंटर्स को हरीसन के प्रोडक्ट के पैकिंग के अंदर लगे क्यू आर को स्कैन करना है स्कैन करते ही पंजीकृत कारपेंटर्स के प्रोफाइल आई डी पर पॉइंट अपने आप दर्ज हो जाएगा | यह सुविधा हरीसन ने कारपेंटर्स की सहूलियत के लिए किया है जिससे अब कारपेंटर्स को किसी भी प्रकार के प्रोडक्ट के पैकिंग की कट्टिंग रखने की आवश्यकता नहीं होगी | अब कारपेंटर्स मात्र क्यू आर स्कैन करके ही जीत सकते है अनेको उपहार|

उपहार जीतने की प्रक्रिया

स्टेप 1 — मोबाइल मे हरीसन सुविधा एप्लीकेशन डाउनलोड करे, और अपनी ID बनाकर लॉगिन करे।

स्टेप 2 — प्रोडक्ट पैक के अंदर लगे QR CODE को सुविधा एप्लीकेशन मे स्कैन करे और MRP के बराबर पॉइंट इकट्ठा करे।

स्टेप 3 — दिये गये 7 उपहार के आधार पर अपने पॉइंट REDEEM करे, और उपहार जीते

Suvidha
iSoftCare Technology

प्ले स्टोर पर (HARRISON SUVIDHA APP) सर्च कर के हरीसन लोगो एप्लीकेशन अपने फ़ोन मे इनस्टॉल करे।

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No.: 1-800-572-5795

HARRISON®

Partners In Progress

Glorious 75+ Years

घर घर हरीसन

अब हर घर में हरीसन

हरीसन "विस्तार" कार्यक्रम का आयोजन

डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और डिजी सेफ सीरीज़ की शुरुआत की।

हरीसन ने "विस्तार" कार्यक्रम के तहत अपनी नई डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ को लॉन्च किया है, जो आधुनिक सुरक्षा तकनीक और उपभोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। **"विस्तार" केवल एक उत्पाद लॉन्च नहीं, बल्कि हरीसन का एक व्यापक बिजनेस एक्सपैंशन प्रोग्राम है,** जिसका उद्देश्य सुरक्षा समाधान के साथ-साथ डीलर नेटवर्क और ब्रांड की पहुंच को भी पूरे देश में मजबूत और विस्तृत करना है। डिजिटल युग में, जहां सुरक्षा का महत्व तेजी से बढ़ रहा है, हरीसन ने अपने डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ को उन्नत तकनीक, स्मार्ट फीचर्स और उच्च विश्वसनीयता के साथ लॉन्च किया है। इस सीरीज़ के तहत उपभोक्ताओं को अधिक सुविधा, सशक्तिकरण और सुरक्षा प्रदान की जाती है। "विस्तार" कार्यक्रम का फोकस न केवल उत्पादों की नई रेंज पेश करना है, बल्कि बिजनेस एक्सपैंशन प्रोग्राम के जरिए डीलरों, आर्किटेक्ट्स और डिजाइनर्स के साथ एक मजबूत साझेदारी बनाना है। इसके अंतर्गत एक्सक्लूसिव ब्रांड आउटलेट्स (EBOs) खोलने और स्थानीय बाजारों में हरीसन की उपस्थिति को बढ़ाने की योजना शामिल है। यह कार्यक्रम हरीसन की प्रगतिशील सोच, नवाचार और सुरक्षा समाधान में उत्कृष्टता प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और डिजी सेफ सीरीज़

डिजिटल बायोमेट्रिक लॉक और सेफ सीरीज़ हरीसन की अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीक का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस सीरीज़ में फिंगरप्रिंट रिकग्निशन, पिन कोड एंट्री और स्मार्ट ऐप कंट्रोल जैसी उन्नत सुविधाएँ शामिल हैं, जो सुरक्षा को नए स्तर पर ले जाती हैं। ये उत्पाद न केवल घर और कार्यालयों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि उपयोगकर्ताओं को सहज और तेज़ एक्सेस का अनुभव भी प्रदान करते हैं। इसके आधुनिक डिज़ाइन, टिकाऊपन और तकनीकी प्रगति ने इसे ग्राहकों के लिए एक अनिवार्य सुरक्षा समाधान बना दिया है। यह सीरीज़ डिजिटल युग की सुरक्षा जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

चेयरमैन क्लब कारपेंटर

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No.: 1-800-572-5795

Advt

EURO®
7000
SYNTHETIC WOOD ADHESIVE

विश्वकर्मा भगवान का सम्मान
पक्के जोड़ का प्रमाण

JYOTI RESINS & ADHESIVES LIMITED
Email : inquiry@euro7000.com | www.euro7000.com | Follow Us :

भगवान विश्वकर्मा : दुनिया के पहले इंजीनियर

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान विश्वकर्मा को दुनिया का सबसे पहला इंजीनियर और वास्तुकार कहा जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इस समस्त ब्रह्मांड की रचना भी विश्वकर्मा जी के हाथों से हुई है। भगवान विश्वकर्मा ने इंद्रपुरी, द्वारिका, हस्तिनापुर, स्वर्गलोक, लंका, जगन्नाथपुरी, भगवान शंकर का त्रिशुल, विष्णु का सुदर्शन चक्र का निर्माण किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस समस्त ब्रह्मांड की रचना भी विश्वकर्मा जी के हाथों से हुई है। ऋग्वेद के 10 वें अध्याय के 121वें सूक्त में लिखा है कि विश्वकर्मा जी के द्वारा ही धरती, आकाश और जल की रचना की गई है। विश्वकर्मा पुराण के अनुसार आदि नारायण ने सर्वप्रथम ब्रह्मा जी और फिर विश्वकर्मा जी की रचना की। कहा जाता है कि सभी पौराणिक संरचनाएं, भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हैं।

पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र, भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं। वज्र का निर्माण भी उन्होंने ही किया था। भगवान विश्वकर्मा ने ही लंका का निर्माण किया था। भगवान शिव ने पार्वती के लिए एक महल का निर्माण करने के बारे में विचार किया। इसकी जिम्मेदारी शिवजी ने भगवान विश्वकर्मा को दी, तब भगवान विश्वकर्मा ने सोने का महल बना दिया। इस महल की पूजा करने के लिए भगवान शिव ने रावण का बुलाया। लेकिन रावण महल को देखकर इतना मंत्रमुग्ध हो गया कि उसने पूजा के बाद दक्षिणा के रूप में महल ही मांग लिया। भगवान शिव महल को रावण को सौंपकर कैलाश पर्वत चले गए। इसके अलावा भगवान विश्वकर्मा ने पांडवों के लिए इंद्रप्रस्थ नगर, कौरव वंश के हस्तिनापुर और भगवान कृष्ण के लिए द्वारका का निर्माण भी किया था।

श्री विश्वकर्मा पूजा का महत्व

हमारे हिन्दू धर्म में भगवान विश्वकर्मा को सृष्टि का निर्माणकर्ता या शिल्पकार माना जाता है। भगवान विश्वकर्मा को ही विश्व का पहला इंजीनियर भी कहा जाता है। इसके साथ ही साथ विश्वकर्मा जी को यंत्रों का देवता भी माना जाता है।

हमारे हिन्दू धर्म में विश्वकर्मा पूजा या विश्वकर्मा जयंती को लेकर कई धारणाएं हैं। जिसमें से एक मान्यता के मुताबिक भगवान विश्वकर्मा का जन्म आश्विन मास की कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तिथि को हुआ मानते हैं। जबकि दूसरी मान्यता के मुताबिक यह माना जाता है कि भगवान विश्वकर्मा का जन्म भाद्र मास की अंतिम तिथि को हुआ था। वहीं इन सबसे अलग एक मान्यता के मुताबिक विश्वकर्मा पूजा को सूर्य पारगमन के आधार पर तय किया गया जिसके चलते विश्वकर्मा पूजा हर वर्ष 17 सितंबर को मनाया जाता है।

ऐसी मान्यता है कि विश्वकर्मा जी की पूजा करने वाले व्यक्ति को किसी तरह की कोई कमी नहीं रहती है। भगवान विश्वकर्मा की पूजा से व्यक्ति के व्यापार में वृद्धि होती है और उसकी सभी मनोकामनाएं भी पूर्ण होती है।

इन बातों का रखें ध्यान

- विश्वकर्मा पूजा करने वाले सभी लोगों को इस दिन अपने कारखाने, फैक्ट्री बंद रखनी चाहिए।
- विश्वकर्मा पूजा के दिन अपनी मशीनों, उपकरणों और औजारों की पूजा करने से घर में बरकत होती है।
- विश्वकर्मा पूजा के दिन औजारों और मशीनों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
- विश्वकर्मा पूजा के दिन तामसिक भोजन (मांस-मदिरा) का सेवन नहीं करना चाहिए।
- अपने रोजगार में वृद्धि के लिए गरीबों और असहाय लोगों को दान-दक्षिणा जरूर दें।
- अपने बिजली उपकरणों और गाड़ी की सफाई भी करें।

भगवान विश्वकर्मा जी की आरती

हम सब उतारें आरती तुम्हारी हे विश्वकर्मा, हे विश्वकर्मा।
युग-युग से हम हैं तेरे पुजारी, हे विश्वकर्मा...।।
मूढ़ अज्ञानी नादान हम हैं, पूजा विधि से अनजान हम हैं।
भक्ति का चाहते वरदान हम हैं, हे विश्वकर्मा...।।
निर्बल हैं तुझसे बल मांगते, करुणा का प्यास से जल मांगते हैं।
श्रद्धा का प्रभु जी फल मांगते हैं, हे विश्वकर्मा...।।
चरणों से हमको लगाए ही रखना, छाया में अपने छुपाए ही रखना।
धर्म का योगी बनाए ही रखना, हे विश्वकर्मा...।।
सृष्टि में तेरा है राज बाबा, भक्तों की रखना तुम लाज बाबा।
धरना किसी का न मोहताज बाबा, हे विश्वकर्मा...।।
धन, वैभव, सुख-शांति देना, भय, जन-जंजाल से मुक्ति देना।
संकट से लड़ने की शक्ति देना, हे विश्वकर्मा...।।
तुम विश्वपालक, तुम विश्वकर्ता, तुम विश्वव्यापक, तुम कष्टहर्ता।
तुम ज्ञानदानी भण्डार भर्ता, हे विश्वकर्मा...।।

भगवान विश्वकर्मा: निर्माण और सृजन के देवता

सनातन धर्म में विश्वकर्मा भगवान को निर्माण और सृजन का देवता माना जाता है। हर साल कन्या संक्रांति के दिन भगवान विश्वकर्मा की पूजा होती है। माना जाता है कि इसी दिन भगवान विश्वकर्मा ने सृष्टि की रचना की थी। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन भगवान विश्वकर्मा की विधिवत्त पूजा-अर्चना करने से व्यापार में बढ़ोतरी होती है और मुनाफा होता है। विश्वकर्मा को दुनिया का पहला इंजीनियर माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार विश्वकर्मा भगवान ने ही देवताओं के लिए अस्त्र, शस्त्र, भवनों और मंदिरों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा भगवान की पूजा सभी कलाकारों, शिल्पकारों और औद्योगिक घरानों से जुड़े लोग करते हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान विश्वकर्मा मशीनों पर अपनी कृपा बनाए रखते हैं जिससे वे जल्दी खराब नहीं होते और व्यापार में लगातार वृद्धि होती है। श्री विश्वकर्मा महापूजा वैसे तो पूरे देश में मनाया जाता है, लेकिन इस दिन उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, असम, त्रिपुरा में अधिक धूम देखने को मिलती है।

इस तरह से करें भगवान विश्वकर्मा की पूजा

सुबह उठकर स्नानादि कर पवित्र हो जाएं। फिर पूजन स्थल को साफ कर गंगाजल छिड़क कर उस स्थान को पवित्र करें। एक चौकी लेकर उस पर पीले रंग का कपड़ा बिछाएं। पीले कपड़े पर लाल रंग के कुमकुम से स्वास्तिक बनाएं। भगवान गणेश का ध्यान करते हुए उन्हें प्रणाम करें। इसके बाद स्वास्तिक पर चावल और फूल अर्पित करें। फिर चौकी पर भगवान विष्णु और विश्वकर्मा जी की प्रतिमा या फोटो लगाएं। एक दीपक जलाकर चौकी पर रखें। भगवान विष्णु और विश्वकर्मा जी के मस्तक पर तिलक लगाएं। विश्वकर्मा जी और विष्णु जी को प्रणाम करते हुए उनका स्मरण करें। साथ ही प्रार्थना करें कि वे आपके नौकरी-व्यापार में तरक्की करवाएं। विश्वकर्मा जी के मंत्र का 108 बार जप करें। फिर श्रद्धा से भगवान विष्णु की आरती करने के बाद विश्वकर्मा जी की आरती करें। आरती के बाद उन्हें फल-मिठाई का भोग लगाएं। इस भोग को सभी लोगों में बांटें।

पूजा का मंत्र

ॐ आधार शक्तपे नमः
ॐ कूमयि नमः
ॐ अनन्तम नमः
ॐ पृथिव्यै नमः

शिल्प के अधिष्ठाता देवता हैं भगवान विश्वकर्मा

उज्जनैपीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरू श्रीश्याम नारायणाचार्य जी महाराज के अनुसार वस्तुतः देव-उपासना परमात्मा के एक रूप-विशेष की ही पूजा है। परम सत्ता के ही विभिन्न गुणों एवं शक्तियों का प्रतिनिधित्व देवगण करते हैं। इस विराट सृष्टि का उत्पादक, पोषक, संहारक एक परमात्मा ही है। उसे ही हम अनेक नामों से पुकारते है।

अध्यात्म शास्त्र में देव-उपासना की विस्तृत चर्चा हुई है। ब्रह्मतत्व का प्रतिपादन करने वाली उपनिष्दों में सक कुछ एक देवताओं के नाम पर भी हैं, उनमें प्रतिपाद्य देवता के गुण, धर्म एवं आराधना के प्रतिफल विस्तार पूर्वक बताये गये हैं। साधक अपनी आवश्यकता और आकांक्षा के अनुरूप तत्सम्बन्धित देवताओं की उपासना मनोयोगपूर्वक करके अपने अभीष्ट की पूर्ति में सफलता प्राप्त कर सकता है। जैसे समस्त प्रजा एक राजा के राज्य में रहती है तो भी उसे अलग-अलग प्रायोजनों के लिए भिन्न-भिन्न विभागों के कर्मचारियों के पास जाना पड़ता है। देव-उपासना का भी तात्पर्य यही है। ईश्वर के विराट स्वरूप के अंग-प्रत्यंगों को उसकी क्रिया-किरणों को 'देवता' नाम से हम पुकारते हैं। श्रीमद्भागवत में कहा गया है, ब्रह्मतेज की इच्छा वाले को बृहस्पति की, इन्द्रिय भोगों के लिए इन्द्र की, संतान-प्राप्ति के लिए प्रजापति की, लक्ष्मी के लिए माया की देवी, तेज के लिए अग्नि की, धन के लिए वसुओं की, पराक्रम के लिये रूद्र की एवं अन्न के लिये अदिति की उपासना करनी चाहिये। स्वर्ग के लिए आदित्यों की, राज्य के लिये विश्वदेवों की, लोक-प्रियता के लिए साध्यगण की, दीघार्यु के लिए अश्विनी कुमारों की, पुष्टि के लिए वसुन्धरा की और प्रतिष्ठा के लिये द्यावा पृथिवी की आराधना करनी चाहिए। सौन्दर्य के लिये गन्धर्वों की, पत्नी की प्राप्ति के लिये उर्वशी अप्सरा की, आधिपत्य की प्राप्ति के लिए ब्रह्मा की, यश के लिए यज्ञ पुरूष की, धन की प्राप्ति के लिए वरूण की, विद्या के लिए शंकर की, दाम्पत्य-प्रेम के लिये गौरी की उपासना करनी चाहिये।

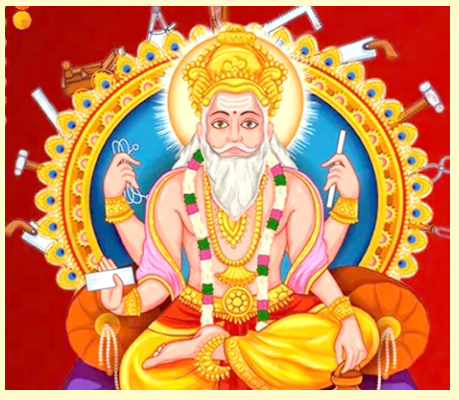

इसी प्रकार धमोर्पार्जन के लिए विष्णु भगवान की, वंश परम्परा की रक्षा के लिए पितरों की, बाधाओं से बचने के लिए यक्षों की, बलवान होने के लिए मरूद्गणों की, राज्य के लिए मन्वन्तरों अधिपति देवों की, भोगों के लिए चन्द्रमा की और निष्कामता प्राप्त करने के लिए परमपुरूष नारायण की आराधना करनी चाहिये।

इसी प्रकार ज्ञान विज्ञान औद्योगिकी और शिल्प की प्राप्ति के लिए विश्वकर्मा जी की उपासना करनी चाहिए। वे ही शिल्प के अधिष्ठाता देवता है।

श्रद्धा और विश्वास के साथ शास्त्रेक्त विधि-विधान से यदि हम विश्वकर्मा जी की उपासना करें तो कामनाओं की सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

नागा साधुओं का रहस्यमय संसार

सनातन धर्म के लोगों की महाकुंभ से खास आस्था जुड़ी है। करीब 13 साल बाद इस बार प्रयागराज संगम नगरी में महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। महाकुंभ में हर बार बड़ी संख्या में साधु संत और नागा साधु आते हैं। नागा साधु की जीवन शैली, रहन-सहन और पहनावा आदि देश ही नहीं दुनिया में खूब चर्चा बटोरता है। ये कहां से आते हैं कुंभ के बाद कहां गायब हो जाते हैं, ये सवाल प्रत्येक व्यक्ति के मन में आता है।

एक निजी चैनल से बातचीत के आधार पर नागा बाबा हरीश गिरी बताया कि उनकी उम्र 65 वर्ष है। वो हरिद्वार में रहते हैं। उन्होंने अपने पूरे शरीर पर श्मशान की भभूत लगा रही है। 12 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने अपना घर-परिवार त्याग दिया था।

वो भगवान शिव को अपना इष्टदेव मानते हैं और शिव जी द्वारा धारण की गई श्मशान की राख को प्रसाद स्वरूप अपने शरीर पर लेप के रूप में लगाते हैं। उनका कहना है कि इस भभूत में ईश्वर की वो शक्ति है, जिससे उन्हें न ही ठंड का अहसास होता है और न ही गर्मी लगती है। ये एक प्रकार से उनका सुरक्षा कवच है।

नागा साधु को पूरा विश्व कुंभ के आगमन और स्नान के दौरान ही देखता है। ऐसे में सबके मन में यह सवाल आता होगा कि कुंभ के बाद हम कहां चले जाते हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, 'हम उत्तराखंड, हिमाचल या किसी गंगा घाट के समीप जंगलों में चले जाते हैं। जहां जो कुछ मिल जाता है, उसका सेवन करके अपना गुजारा करते हैं। घास, फूल और फल भी हमारे लिए लाभप्रद है, क्योंकि हम शिव जी की आराधना में वैराग्य जीवन जीने के लिए बने हैं और ये ही हमारी सम्पूर्ण जिंदगी है।'

धर्म योद्धा होते हैं नागा साधु

भारतीय सनातन धर्म के वर्तमान स्वरूप की नींव आदिगुरू शंकराचार्य ने रखी थी। शंकर का जन्म 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के में हुआ था जब भारतीय जनमानस की दशा और दिशा बहुत बेहतर नहीं थी। भारत की धन संपदा से खिंचे तमाम आक्रमणकारी यहां आ रहे थे। कुछ उस खजाने को अपने साथ वापस ले गए तो कुछ भारत की दिव्य आभा से ऐसे मोहित हुए कि यहीं बस गए, लेकिन कुल मिलाकर सामान्य शांति-व्यवस्था बाधित थी। ईश्वर, धर्म, धर्मशास्त्रों को तर्क, शस्त्र और शास्त्र सभी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में शंकराचार्य ने सनातन धर्म की स्थापना के लिए कई कदम उठाए, जिनमें से एक था देश के चार कोनों पर चार पीठों का निर्माण करना। यह थी गोवर्धन पीठ, शारदा पीठ, द्वारिका पीठ और ज्योतिर्मठ पीठ। इसके अलावा आदिगुरू ने मठों-मन्दिरों की सम्पत्ति को लूटने वालों और श्रद्धालुओं को सताने वालों का मुकाबला करने के लिए सनातन धर्म के विभिन्न संप्रदायों की सशस्त्र शाखाओं के रूप में अखाड़ों की स्थापना की शुरुआत की।

आदि गुरु शंकराचार्य को लगने लगा था सामाजिक उथल-पुथल के उस युग में केवल आध्यात्मिक शक्ति से ही इन चुनौतियों का मुकाबला करना काफी नहीं है। उन्होंने जोर दिया कि युवा साधु व्यायाम करके अपने शरीर को सुदृढ़ बनाये और हथियार चलाने में भी कुशलता हासिल करें। इसलिए ऐसे मठ बने जहां इस तरह के व्यायाम या शस्त्र संचालन का अभ्यास कराया जाता था, ऐसे मठों को अखाड़ा कहा जाने लगा। आम बोलचाल की भाषा में भी अखाड़े उन जगहों को कहा जाता है जहां पहलवान कसरत के दांवपेंच सीखते हैं। कालांतर में कई और अखाड़े अस्तित्व में आए। शंकराचार्य ने अखाड़ों को सुझाव दिया कि मठ, मंदिरों और श्रद्धालुओं की रक्षा के लिए जरूरत पड़ने पर शक्ति का प्रयोग करें। इस तरह बाह्य आक्रमणों के उस दौर में इन अखाड़ों ने एक सुरक्षा कवच का काम किया। कई बार स्थानीय राजा-महाराज विदेशी आक्रमण की स्थिति में नागा योद्धा साधुओं का सहयोग लिया करते थे। इतिहास में ऐसे कई गौरवपूर्ण युद्धों का वर्णन मिलता है जिनमें 40 हजार से ज्यादा नागा योद्धाओं ने हिस्सा लिया। अहमद शाह अब्दाली द्वारा मथुरा-वृन्दावन के बाद गोकुल पर आक्रमण के समय नागा साधुओं ने उसकी सेना का मुकाबला

करके गोकुल की रक्षा की। नागा साधु अपने पास हमेशा तलवार, भाला, बरछी, फरसा, ढाल, चाकू, गदा, तीर-कमान, चक्र और त्रिशूल रखते हैं, जो उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। ये किसी न किसी देवता या देवी के शस्त्र हैं, जिन्हें बाबा अपने सिद्धि मंत्रों व जाप के जरिए शक्तिशाली बनाते हैं। नागा साधु तीन प्रकार के योग करते हैं जो उनके लिए ठंड से निपटने में मददगार साबित होते हैं। वे अपने विचार और खानपान, दोनों में ही संयम रखते हैं। नागा साधु एक सैन्य पंथ है और वे एक सैन्य रेजिमेंट की तरह बंटे हैं। त्रिशूल, तलवार, शंख और चिलम से वे अपने सैन्य दर्जे को दर्शाते हैं।

नागा साधु बनने की प्रक्रिया बेहद कठिन मानी जाती है। अखाड़ों के द्वारा व्यक्ति को नागा साधु बनाया जाता है। अखाड़ा समिति देखती है कि व्यक्ति साधु के योग्य है या नहीं। इसके बाद उस व्यक्ति को अखाड़े में प्रवेश दिया जाता है। इसके पश्चात व्यक्ति को कई तरह की परीक्षाएं देनी होती हैं। नागा साधु बनने के लिए ब्रह्मचर्य के नियम का पालन करना अति आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में छह महीने से लेकर एक वर्ष तक का समय लग सकता है। इस परीक्षा में सफलता पाने के लिए साधक को पांच गुरुओं से दीक्षा प्राप्त करनी होती है। शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य और गणेश द्वारा, जिन्हें पंच देव भी कहा जाता है। इसके बाद व्यक्ति सांसारिक जीवन का त्याग कर आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करते हैं और स्वयं का पिंडदान करते हैं। नागा साधु भिक्षा में प्राप्त हुए भोजन का सेवन करते हैं। अगर किसी दिन साधु को भोजन नहीं मिलता है, तो उन्हें बिना भोजन के रहना पड़ता है। नागा साधु जीवन में सदैव वस्त्र धारण नहीं करते हैं, क्योंकि वस्त्र को आडंबर और सांसारिक जीवन का प्रतीक माना जाता है। इसी वजह से वह अपने शरीर को ढंकने के लिए भस्म लगाते हैं। सबसे अहम बात बता दें कि नागा साधु सोने के लिए भी बिस्तर का प्रयोग नहीं करते हैं। नागा साधु समाज के लोगों के सामने सिर नहीं झुकाते हैं लेकिन वह वरिष्ठ सन्यासियों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सिर झुकाते हैं। जो व्यक्ति इन सभी नियमों का पालन करता है, वह नागा साधु बनता है। इनके गुस्से के बारे में प्रचलित किस्से कहानियां भी भीड़ को इनसे दूर रखती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह शायद ही किसी को नुकसान पहुंचाते हो। लेकिन अगर बिना कारण अगर कोई इन्हें उकसाए या तंग करे तो इनका क्रोध भयानक हो उठता है। कहा जाता है कि भले ही दुनिया अपना रूप बदलती रहे लेकिन शिव और अग्नि के ये भक्त इसी स्वरूप में रहेंगे।

महिला नागा साधु

पुरुष नागा साधुओं की तरह महिलाएं भी नागा साधु बनती है, लेकिन उनके लिए नागा साधु बनने की प्रक्रिया पुरुषों से कहीं ज्यादा कठिन होती है। महिला नागा साधुओं की दुनिया बेहद रहस्यमयी होती है। नागा साधु बनने से पहले किसी भी महिला को बहुत कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। नागा साधुओं में बहुत से वस्त्रधारी और बहुत से दिगंबर यानी निर्वस्त्र साधु होते हैं। इसी तरह जब महिलाएं भी संन्यास में दीक्षा लेती हैं तो उन्हें भी नागा बनाया जाता है। नागा साध्वियों को शिवजी का घोर तप करना होता है। ये पूरे दिन शिव आराधना करती हैं। इनका जीवन भी भगवान शिव की तरह हमेशा तप में लीन रहता है। मौसम चाहे कोई भी हो, नागा साधुओं की तरह नागा साध्वियां भी एक जैसी स्थिति में चौतरफा अग्नि के सामने शिव की आराधना करती हैं।

नागा साधु बनने के लिए महिलाओं को अपने शरीर में कई बदलाव करने पड़ते हैं। उन्हें अपना मुंडन करना होता है। इसके अलावा उन्हें अपने गुरु को विश्वास दिलाना पड़ता है कि वे अपने परिवार से और इस संसार के मोह से पूरी तरह मुक्त हो चुकी हैं। क्योंकि नागाओं की दुनिया में मोह की कोई जगह नहीं होती। कई वर्षों की कठिन परीक्षा और तप के बाद भी कुछ महिलाएं ही नागा साधु बन पाती हैं।

उन्हें सबसे पहले खुद का पिंडदान करना होता है। फिर अपना मुंडन करवाने के बाद खुद का तर्पण करती हैं। इस प्रक्रिया से ये साध्वियां खुद को इस संसार के लिए मृत बना लेती हैं। यहां से इनकी तपस्वी बनने की यात्रा प्रारंभ होती है। इन्हें 10 सालों तक ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। नए जीवन में ये बस भक्ति और साधना में ही लगी रहती हैं।

जब कोई साधवी इन सारी परिस्थितियों में टिक जाती हैं, तब ही उन्हें नागा साधु बनाया जाता है। सारी परीक्षाओं पर खरा उतरने के बाद ही इन महिला साधुओं को दीक्षा दी जाती है। महिला नागा साधुओं को अपना शरीर पीले रंग के वस्त्र से ढकना होता है। नियमतः यह वस्त्र सिला हुआ नहीं होना चाहिए। हालांकि वे चाहें तो इस वस्त्र का इस्तेमाल नहीं भी कर सकती हैं। मगर कुंभ में महिला नागा साधुओं को नग्न स्नान की अनुमति नहीं है। महिला नागा साधुओं के माथे पर तिलक होता है। वे भी अपने पूरे शरीर पर भस्म लगाती हैं। नागा साधुओं की तरह ही लेकिन अलग जगह पर शाही स्नान करती हैं। महिला नागा साधु सादा जीवन जीती हैं।

महिला नागा साधु बनने के बाद उन्हें माता कहकर बुलाया जाता है। महिला नागा साधुओं के भी अखाड़े होते हैं इसी तरह के एक अखाड़े में माई बाड़ा नाम का अखाड़ा है, जिसमें नागा महिला साधु होती हैं। इसे अब दशनाम संन्यासिनी अखाड़ा का नाम दिया गया है। बताया जाता है कि साधुओं में तीन संप्रदाय होते हैं, वैष्णव, शैव और उदासीन। इन्हीं संप्रदायों के अखाड़े नागा साधु बनाते हैं।

जब धर्म रक्षक बने नागा

दुनिया की मोह माया से दूर अपने आराध्य में मगन नजर आते है। ऐसे में गौर किया जाए तो नागा साधुओं का आचरण भगवान शिव से कम नहीं। गौरतलब है कि भगवान शिव की तरह ही समाधि में लीन, शरीर पर नाम मात्र वस्त्र और अपनी दुनिया में मगन। यहां अगर शिव की बात हो ही रही है तो शिव के प्रचंड रूप का भी ज़िक्र करना आवश्यक हो जाता है। पापी जब सीमा लांघ जाता है तब शिव भी प्रचंड रूप धारण कर लेते है और अपने एक वार से संसार का नाश करने की शक्ति रखते हैं। वहीं नागा साधु भी दुश्मन के द्वारा अति होने के बाद सामने वाले का नाश करने की क्षमता रखते हैं। एक युद्ध नागा साधुओं का क्रूर अहमदशाह अब्दाली के साथ था जिसमें 2000 साधुओं ने अपनी जान की परवाह किये बिना मुगलों से युद्ध किया था और दुश्मन को अपनी जगह से एक कदम भी आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया था। अब्दाली दिल्ली और मथुरा पर हमला करते हुए गोकुल की तरफ अग्रसर हो रहा था। रास्ते में लोगों का नरसंहार करता हुआ वह न औरतों को न बच्चों को बख्श रहा था। महिलाओं का बलात्कार और बच्चों को दूर देशों में बेच रहा था। देश में ऐसा कत्लेआम देख कर करीब 5000 नागा साधुओं ने इन अब्दाली का सामना करने की ठानी। साधुओं ने हथियार उठाये और अहमदशाह अब्दाली से युद्ध किया। इस भयंकर युद्ध में करीब 2000 नागा साधु वीरगति को प्राप्त हुए थे। जब युद्ध शुरू हुआ था तब अहमदशाह अब्दाली साधुओं को संत समझकर उन्हें हल्के में ले रहा था। लेकिन जैसे जैसे युद्ध आगे बढ़ा वैसे वैसे अब्दाली को अंदाज़ा लग चुका था कि ये साधु देश के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। युद्ध की ख़ास बात थी कि जिस सेना के सामने बड़े बड़े योद्धा हाथ खड़े कर लेते थे उसी सेना को नागा साधुओं ने एक कदम भी आगे बढ़ाने नहीं दिया, सेना का जो योद्धा जहां था वहीं उसे मौत के घाट उतारा गया। दशनामी अखाड़ों को देश और धर्म की रक्षा करने के लिए स्थापित किया गया था, नागा साधुओं ने अपने धर्म और कर्म का उसी तरह पालन भी किया।

नागाओं के प्रमुख अखाड़े

भारत की आजादी के बाद इन अखाड़ों ने अपना सैन्य चरित्र त्याग दिया। इन अखाड़ों के प्रमुख ने जोर दिया कि उनके अनुयायी भारतीय संस्कृति और दर्शन के सनातनी मूल्यों का अध्ययन और अनुपालन करते हुए संयमित जीवन व्यतीत करें। इस समय 13 प्रमुख अखाड़े हैं जिनमें प्रत्येक के शीर्ष पर महन्त आसीन होते हैं। इन प्रमुख अखाड़ों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं –

श्री निरंजनी अखाड़ा – यह अखाड़ा 826 ईस्वी में गुजरात के मांडवी में स्थापित हुआ था। इनके ईष्ट देव भगवान शंकर के पुत्र कार्तिकस्वामी हैं। इनमें दिगम्बर, साधु, महंत व महामंडलेश्वर होते हैं। इनकी शाखाएं प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार, त्र्यंबकेश्वर व उदयपुर में हैं।

श्री जूनादत्त या जूना अखाड़ा – यह अखाड़ा 1145 में उत्तराखंड के कर्णप्रयाग में स्थापित हुआ। इसे भैरव अखाड़ा भी कहते हैं। इनके इष्ट देव रुद्रावतार दत्तात्रेय हैं। इसका केंद्र वाराणसी के हनुमान घाट पर माना जाता है। हरिद्वार में माया देवी मंदिर के पास इनका आश्रम है। इस अखाड़े के नागा साधु जब शाही स्नान के लिए संगम की ओर बढ़ते हैं तो मेले में आए श्रद्धालुओं समेत पूरी दुनिया की सांसें उस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए रुक जाती हैं।आजकल इनके पीठाधीश्वर स्वामी अवधेस आनंद गिरी महाराज हैं।

श्री महानिर्वाण अखाड़ा – यह अखाड़ा 671 ईस्वी में स्थापित हुआ था, कुछ लोगों का मत है कि इसका जन्म बिहार-झारखंड के बैजनाथ धाम में हुआ था, जबकि कुछ इसका जन्म स्थान हरिद्वार में नील धारा के पास मानते हैं। इनके इष्ट देव कपिल महामुनि हैं। इनकी शाखाएं इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर, ओंकारेश्वर और कनखल में हैं। इतिहास के पन्ने बताते हैं कि 1260 में महंत भगवानंद गिरी के नेतृत्व में 22 हजार नागा साधुओं ने कनखल स्थित मंदिर को आक्रमणकारी सेना के कब्जे से छुड़ाया था। वर्षों प्राचीन पाशुपत परंपरा से उज्जैन स्थित महाकाल ज्योतिर्लिंग पर नित्य प्रति इसी अखाडे के पुरी नामा नागा साधुओं के महंत भस्म चढ़ाते आ रहे हैं।

प्रयागराज में संगम के पास ही नागवासुकी मंदिर स्थित है। इस मंदिर का संबंध महाकुंभ से जुड़ा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के बाद नागराज वासुकी ने यही पर विश्राम किया था। सावन महीने में यहां पर बड़ी संख्या में लोग दर्शन के लिए पहुंचते हैं। धर्म और आस्था की कुंभ नगरी प्रयागराज के संगम तट से उत्तर दिशा की ओर दारागंज के उत्तरी कोने पर अति प्राचीन नागवासुकी मंदिर स्थित है। इस मंदिर में नागों के राजा वासुकी नाग विराजमान रहते हैं। मान्यता है कि प्रयागराज आने वाले हर श्रद्धालु और तीर्थयात्री की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है, जब तक की वह नागवासुकी का दर्शन न कर लें। नागवासुकी जी शंकर जी के गले के नागों के राजा हैं। समुद्र मंथन के बाद भगवान विष्णु द्वारा उन्हें यहां जगह दिया गया। पौराणिक कथाओं के अनुसार, समुद्र मंथन में देवताओं और असुरों ने नागवासुकी को सुमेरु पर्वत में लपेटकर उनका प्रयोग रस्सी के तौर पर किया था। समुद्र मंथन के बाद नागराज वासुकी पूरी तरह लहूलुहान हो गए थे और भगवान विष्णु के कहने पर उन्होंने प्रयागराज में इसी जगह आराम किया था। यहां ब्रह्मा जी ने शंकर जी की स्थापना के लिए यज्ञ किया था। उस यज्ञ में भगवान वासुकी जी भी गए हुए थे। जब वे वापस आने लगे तो विष्णु जी ने कहा कि इन्हें यहां स्थापित कर दिया जाए।

नाग वासुकी मंदिर और कुंभ

वासुकी जी थोड़ा नाराज हुए कि मैं सात हजार वर्ष से यहां पड़ा हूं और आज मेरी याद आई। विष्णु जी ने कहा कि नाराज मत होइए, कोई वचन मांग लीजिए। तब उन्होंने वचन मांगा कि सावन की नाग पंचमी को तीनों लोक में हमारी पूजा हो। यहां सावन में दर्शन करने मात्र से सभी ग्रहों का नाश हो जाता है। कुंभ आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए यह मंदिर महत्व रखता है। इस मंदिर का दर्शन पूजन करने के बाद भी कुंभ तीर्थ सफल माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इलाहाबाद के नागवासुकी मंदिर से कंकड़ ले जाकर घर के चारों तरफ रखने वालों पर कभी साँपों और नागों की काली छाया नहीं पड़ती। इतना ही नहीं यहां के कंकड़ घर में रखने वालों को सर्पदोष से भी मुक्ति मिल जाती है। कहा जाता है कि जब मुगल बादशाह औरंगजेब भारत में मंदिरों को तोड़ रहा था, तो वह अति चर्चित नागवासुकी मंदिर को खुद तोड़ने पहुंचा था। जैसे ही उसने मूर्ति पर भाला चलाया तो अचानक दूध की धार निकली और चेहरे के ऊपर पड़ने से वो बेहोश हो गया।

जो भी श्रद्धालु सावन मास में नागवासुकी का दर्शन पूजन करता है, उसकी सारी बाधाएं दूर हो जाती हैं। इसके साथ ही कालसर्प दोष से भी मुक्ति मिलती है। नाग पंचमी के दिन दूर दराज से लाखों श्रद्धालु दर्शन पूजन के लिए यहां पहुंचते हैं। कुंभ आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए यह मंदिर महत्व रखता है। इस मंदिर का दर्शन पूजन करने के बाद भी कुंभ तीर्थ सफल माना जाता है। जो भी श्रद्धालु सावन मास में नागवासुकी का दर्शन पूजन करता है, उसकी सारी बाधाएं दूर हो जाती हैं। इसके साथ ही कालसर्प दोष से भी मुक्ति मिलती है।

वादियों में छुट्टियां मनाती कैमरे में कैद हुईं मनीषा

अभिनेत्री मनीषा कोइराला दोस्तों के साथ खूबसूरत वादियों में छुट्टियां मना रही हैं। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर प्रशंसकों को अपनी छुट्टियों के साथ प्राकृतिक सुंदरता की झलक दिखाई। काम से जुड़े पोस्ट हो या फैमिली इवेंट, अभिनेत्री प्रशंसकों के साथ सोशल मीडिया के जरिए जुड़ी रहती हैं। मनीषा कोइराला ने लिखा, मैं प्रकृति प्रेमी हूं। शेयर किए गए वीडियो में मनीषा दोस्तों के साथ खूब मस्ती करती और प्रकृति के सुंदर नजारों को निहारती नजर आईं। अभिनेत्री प्रकृति प्रेमी हैं और इससे जुड़े पोस्ट वह अक्सर शेयर करती रहती हैं। कभी खुले आसमान तो कभी

जंगलों, नदियों के लिए वह अपनी भावनाएं व्यक्त करती रहती हैं। कोइराला हाल ही में नेपाल के पहाड़ों पर हाइकिंग (पैदल चलना) भी की थीं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपनी यात्रा की तस्वीरें शेयर की थी, जिसमें वह नेपाल के घान्द्रुक इलाके में पैदल चलती नजर आई थीं। इसके साथ ही घान्द्रुक संग्रहालय भी पहुंची थीं और गुरुंग लोगों के इतिहास और संस्कृति के बारे में जानकारी ली थी। मनीषा ने नेपाल की स्थानीय संस्कृति, भोजन और शिल्प कौशल की भी सराहना की थी। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर नेपाल यात्रा की और वहां के पारंपरिक हस्तनिर्मित उत्पादों और स्थानीय भोजन की तस्वीरें साझा कीं। मनीषा ने एक कार्यक्रम में भी भाग लिया, जहां उन्होंने माइक संभाला और स्थानीय उद्यमियों की सराहना की थी।

जुनैद की लवयापा रिलीज को तैयार

आमिर खान के बेटे जुनैद खान अपनी फिल्म लवयापा की रिलीज के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस फिल्म में जुनैद खान के साथ खुशी कपूर नजर आएंगी। ये जुनैद और खुशी दोनों की दूसरी फिल्म है। इससे पहले जुनैद महाराज में नजर आए थे और खुशी द आर्चीज में और ये दोनों फिल्में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज हुई थी। इस बीच जुनैद खान ने सोशल मीडिया और बॉलीवुड में अपने परिवार के वर्चस्व के बारे में खुलकर बात की। जुनैद खान बॉलीवुड के अन्य यंग स्टार्स के विपरीत सोशल मीडिया से पूरी तरह दूरी बनाए रखते हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू में जुनैद ने माना कि उन्हें काम के लिए सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने की जरूरत नहीं है। उनके अनुसार उनके परिवार की विरासत उन्हें प्रोजेक्ट दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। जुनैद को उनके परिवार के नाम के दम पर ही काम मिल जाता है। जुनैद खान ने खुलेआम माना की आमिर खान का बेटा होना उनके लिए कई फायदे दिलाता है और उन्हें इसका एहसास है। जुनैद के अनुसार उन्हें काम के लिए सोशल मीडिया में व्यस्त होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि उन्हें उनके पिता के दम पर ही काम मिल जाता है। जुनैद कहते हैं कि सच बताऊं तो मुझे किसी ने कभी कुछ निगेटिव नहीं कहा। मैं सोशल मीडिया पर नहीं हूं, तो मुझे इसका आईडिया नहीं है। जुनैद कहते हैं कि ये भी एक फायदा है। प्रोड्यूसर मुझे मेरी पब्लिक प्रेजेंस देखे बिना भी कास्ट कर लेंगे। बहुत से अभिनेताओं के पास ये प्रिविलेज नहीं है। ये पूरी तरह से उस परिवार के कारण है, जिससे मैं आता हूं। जुनैद खान ने 2024 में यशराज फिल्म्स की महाराज से अपना डेब्यू किया था, जिसमें उनके साथ शालिनी पांडे और जयदीप अहलावत जैसे कलाकार नजर आए थे। ये फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई थी।

सान्या मल्होत्रा का है शादी करने का प्लान

सान्या मल्होत्रा फिल्म Mrs. में नजर आने वाली हैं। ये फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर रिलीज होगी। इस फिल्म में सान्या एक हाउसवाइफ के रोल में हैं। फिल्म में दिखाया गया कि कैसे शादी के बाद उनकी जिंदगी पूरी तरह बदल जाती है। यह फिल्म मलयालम फिल्म द ग्रेट इंडियन किचन की रीमेक है। फिल्म 7 फरवरी को रिलीज होने वाली है। एक्ट्रेस जोरों-शोरों से फिल्म का प्रमोशन कर रही हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू में सान्या ने अपने मैरिज प्लान पर बात करते हुए कहा कि नहीं, अभी शादी को लेकर मेरे पास समय नहीं है। मैं अपने काम में बिजी हूं। टाइम नहीं है, मेरे पास छुट्टी लेने का। सान्या की सितार वादक ऋषभ रिखीराम शर्मा संग लिंकअप की खबरें आई थी। उन्हें साथ में कई बार स्पॉट किया गया। सान्या से हॉलीवुड प्लान्स के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि मेरे हॉलीवुड को लेकर कोई प्लान नहीं है। बस इतना है कि मुझे काम से कुछ समय का ब्रेक लेना है और वेकेशन पर जाना है। वर्क फ्रंट पर सान्या ने दंगल से डेब्यू किया था। इस फिल्म में वो बबीता कुमारी के रोल में थीं। इसके बाद वो पटाखा, बधाई हो, फोटोग्राफ, शकुंतला देवी, कटहल, जवान, सैम बहादुर, बेबी जॉन जैसी फिल्मों में दिखीं। अब उनके हाथ में सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी, ठग लाइफ और अनुराग कश्यप की अनटाइटल्ड फिल्म में नजर आएंगी।

अमेरिका में हुईं स्पॉट जरीन खान

बॉलीवुड की हॉट एक्ट्रेस में से एक जरीन खान इन दिनों अमेरिका में छुट्टियां मना रही हैं। एक्ट्रेस की सेल्फी वाली तस्वीर सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है।

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो जरीन की ये तस्वीर अमेरिका के टेक्सास प्रांत की माउंट बोनेल की है। उन्होंने कैप्शन में लिखा कि माउंट बोनेल के लुभावने दृश्यों का आनंद लेते हुए, ऑस्टिन में प्रकृति और क्षितिज का परफेक्ट मिश्रण है। जरीन खान के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह जल्द ही अपकमिंग ऐतिहासिक ड्रामा करिकालन में विक्रम के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करती नजर आएंगी। फिल्म में विक्रम संगम काल के चोल के शुरुआती लोकप्रिय तमिल राजाओं में से एक करिकालन चोल की ऐतिहासिक भूमिका में नजर आएंगे। वहीं जरीन एक सामंती खानदान की लड़की की भूमिका में नजर आएंगी। अभिनेत्री वीर, हाउसफुल 2, हेट स्टोरी 3, वजह तुम हो, अक्सर 2, और 1921 समेत अन्य कई फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

प्रियंका चोपड़ा को बेवफाई से हुई तकलीफ

प्रियंका चोपड़ा बहुत जल्द बॉलीवुड में वापसी करने जा रही हैं। उन्होंने बॉलीवुड में कई सुपरस्टार्स के साथ काम किया है और इस दौरान उनका कई सितारों के साथ नाम भी जुड़ा। अब सालों बाद प्रियंका ने खुलासा किया है कि शादी से पहले उन्हें प्यार में धोखा मिला था जिसकी वजह से उन्हें काफी तकलीफ हुई थी। एक पत्रिका को दिए इंटरव्यू में प्रियंका चोपड़ा ने इस बारे में खुलकर बात की। एक्ट्रेस इस दौरान अपने पार्टनर में होने वाली उन क्वालिटीज का लेकर भी बात की जो उन्होंने शादी से पहले तय कर लिए थे। प्रियंका ने कहा कि अगर ये गुण उनके पार्टनर में नहीं होते तो वो शादी ही नहीं करती। प्रियंका ने एक आइडियल पार्टनर को लेकर कहा कि पहली ईमानदारी थी, क्योंकि मेरे पिछले कुछ रिश्तों में ऐसे मौके आए थे जब मुझे बेवफाई से तकलीफ हुई थी। दूसरा ये कि उसे फैमिली वैल्यूज की सराहना करनी थी। तीसरा, उसे अपने पेशे को बहुत सीरियसली लेना था, क्योंकि मैं अपने पेशे को बहुत सीरियस लेती हूं। चौथा, मैं किसी ऐसे शख्स को चाहती जो क्रिएटिव हो और जिसमें मेरे साथ बड़े सपने देखने की चाह हो और पांचवां, मैं किसी ऐसे शख्स को चाहती जिसमें मेरी तरह एक्साइटमेंट और एंबीशन हो। उन्होंने कहा कि अगर उसने ऐसा नहीं किया होता तो मैंने उससे शादी नहीं की होती। आपको किसी ऐसे शख्स की तलाश करनी होगी जो आपकी इज्जत करता हो। इज्जत, प्यार और स्नेह से अलग है। जब तक आपको अपना राजकुमार नहीं मिल जाता तब तक आपको बहुत सारे मेंढकों को चूमना होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक-गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा द्वारा 306, दिघे नगर को आप हाउसिंग सोसायटी, फितवाला रोड, एलफिन्स्टन (वेस्ट), मुंबई-40013 से प्रकाशित एवं एस आर पब्लिकेशन, मोहन अर्जुन कम्पाउंड, गाला नम्बर-8, 9, 10, घर्टनपाढा, वैशाली नगर लास्ट बस स्टॉप, नियर भारत गैस गोडाउन, दहिसर (ईस्ट), मुंबई- 400068 से मुद्रित। संपादक - गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा* RNI NO. MAHHIN/2005/16460 मो. 09320566633. (सभी विवादों का निपटारा न्यायक्षेत्र केवल मुंबई न्यायालय के अधीन होगा. *पी. आर. बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

Zubaan Ke पक्के Rewards

EURO 7000 SYNTHETIC WOOD ADHESIVE

कारपेंटर भाइयो के लिए
स्पेशल ऑफर

सिर्फ 210 Points पर पाइये
American Tourister Trolley Bag Worth ₹ 8,800/-

टोकन / पाउच		पॉइंट / पाउच
15 Rs/- टोकन / पाउच	+	1 पॉइंट / पाउच

टोकन / पाउच		पॉइंट / पाउच
25 Rs/- टोकन / पाउच	+	2 पॉइंट्स / पाउच

रिडीम 210 पॉइंटस
GET AMERICAN TOURISTER TROLLEY BAG WORTH RS. 8,800/-

AMERICAN TOURISTER TROLLEY BAG WORTH RS. 8,800/-

Terms & Conditions:
• यह Offer Limited समय के लिए ही है।
• इस Offer का लाभ उठाने के लिए "EURO7000 DIGITAL" Application Download करें और Points Scan करें।

SCAN KIJIYE

www.euro7000.com

तापड़िया®
AN ISO-9001 CO.

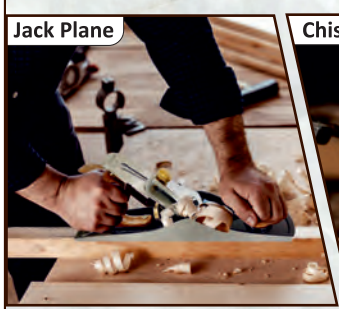

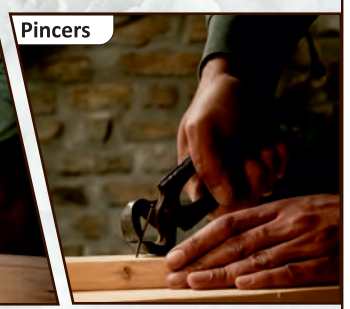

तापड़िया टुल्स
औजारों की विशेष श्रृंखला !

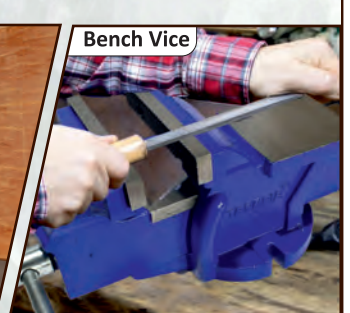

Head Office :- 423/424, A-2, Shah & Nahar, Lower Parel (W), Mumbai - 400013. | Tel: 022 - 6147 8646
E-mail: sales@tapariatools.com | Visit : www.tapariatools.com | CIN : L99999MH1965PLC013392
Works: 52-B, M.I.D.C., Satpur, Nashik - 422007 | Tel: 0253 - 2350 317 | E-mail: nashik@tapariatools.com
Marketed & Distributed by : M/s Orient Agency Private Ltd
Follow us on

TJM/TTL/25/HIN

25 YEARS

OZONE® | SMART SAFES, LOCKS AND DOOR HARDWARE

स्मूथ डोर फिटिंग्स के साथ स्मार्ट सिक्योरिटी

वेबसाइट के लिए स्कैन करें

कस्टमर केयरः +91 9310012300
ईमेलः customercare@ozone.in
हमें फॉलो करें

25 YEARS

OZONE®

OZO STARS
एक पहल, अपनों के साथ!

लॉयल्टी प्रोग्राम

स्कैन करें और कमाएं

ग्लास फेब्रिकेटर्स, कॉंट्रेक्टर्स और कारपेंटर्स के लिए एक विशेष लाभकारी प्रोग्राम

ओज़ोस्टार्स ऐप डाउनलोड करें

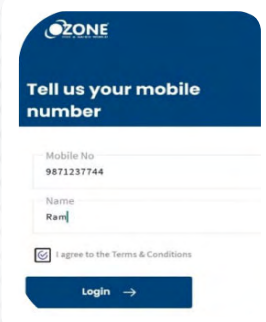

रजिस्ट्रेशन के लिए अपने डिटेल्स भरें

ओज़ोन प्रोडक्ट पर लगे QR कोड को स्कैन करें

लोयल्टी पॉइंट्स, गिफ्ट एवं यूपीआई प्राप्त करें*

ओज़ोस्टार्स ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

Android iOS

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

1800-202-0204

*नियम व शर्तें लागू